



चुने हुए शेर

डॉ. किशन तिवारी



सम्पादन

हरेराम समीप

डॉ. किशन तिवारी

जन्म : 14 अक्टूबर, 1949 को भोपाल में हुआ ।

माता का नाम : श्रीमती कमला देवी

पिता का नाम : श्री गौरी शंकर तिवारी

शिक्षा : एम.ए., पी.एच.डी. (हिंदी)

लेखन विधा : बुन्देली एवं हिंदी ग़ज़ल है और केंद्रीय विधा हिंदी ग़ज़ल है जिसके लिए जाने जाते हैं ।

प्रकाशित कृतिया : 'भूख से घबराकर', 'आपकी जेब में', 'सोचिए तो सही', 'मैं तुम हो जाऊँ', 'कै रये हैं रामधई', 'सारथी मैं हूँ', 'धूप का रास्ता' ।

साझा संकलन : 'आपके रंग पर्व' पत्रिका का सम्पादन किया है ।

सम्मान : कुल बीस से अधिक साहित्यिक सम्मान प्राप्त हो चुके हैं जिनमें प्रमुख पाँच इस प्रकार हैं—

1. नागरिक कल्याण समिति का राज्यपाल द्वारा सम्मान-1996
2. अभिनव कला परिषद उत्सव गणतंत्र सम्मान भोपाल-1998
3. कादम्बरी संस्था जबलपुर का पचौरी लोक साहित्य सम्मान-2009
4. गीत चाँदनी हैदराबाद- निराला सम्मान-2011
5. संयोग साहित्य मुम्बई-ग़ज़ल गौरव सम्मान-2016

वर्तमान पता : 34, सेक्टर-9-ए, साकेत नगर, भोपाल-462024

मोबाईल : 94256-04488

ई-मेल : kishan.young@gmail.com



लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस

नई दिल्ली

फ़ोन : 99682-88050, 82879-88726

ISBN 978-93-6306-320-4



₹ 160.00

चुने हुए शेर
डॉ. किशन तिवारी

चुने हुए शेर

डॉ. किशन तिवारी

सम्पादन
हरेराम समीप



लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस



लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस

I.S.B.N # 978-93-6306-320-4

4637/20, शॉप नं.-एफ-5, प्रथम तल, हरि सदन,
अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

मो. : 9968288050, 9911866239

ई-मेल: littlebirdinfo21@gmail.com

प्रथम संस्करण : 2024

© हरeram समीप

आवरण चित्र : ककसाड़ टीम

मुद्रक : बालाजी प्रिंटर्स, दिल्ली

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए लेखक/प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

स्वर्णिम भारत के लिए

विसंगत वर्तमान को चित्रित करते शेर

हिन्दी साहित्य में डॉ. किशन तिवारी एक सुपरिचित एवं प्रतिष्ठित नाम हैं। वे पिछले चार दशकों से हिन्दी ग़ज़ल-रचना में तल्लीन हैं। अपनी ग़ज़ल यात्रा में उनके छह ग़ज़ल संग्रह 'भूख से घबराकर', 'मैं तुम हो जाऊँ,' आपकी जेब में,' सारथी मैं हूँ', 'सोचिये तो सही' और 'धूप में से उनकी सोच', उनकी काव्य-दृष्टि और सृजन-सरोकारों का बखूबी परिचय देते हैं। वे दुष्यंत, अदम, शलभ आदि की जनधर्मी ग़ज़ल परम्परा को आगे बढ़ाते हुए अपनी ग़ज़लों के माध्यम से आज के दौर की विसंगतियों को प्रस्तुत कर रहे हैं। उन्होंने हिन्दी ग़ज़ल के विकास पर शोध करके पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की और हिन्दी ग़ज़ल के अध्ययन और विकास में नए आयाम स्थापित किए। एक और विशेष बात यह है कि डॉ. किशन तिवारी जितने अच्छे शेर लिखते हैं, उतने ही आकर्षक अन्दाज़ से उन्हें पढ़ते भी हैं। यही कारण है कि वे ग़ज़ल प्रेमियों के बीच बहुत लोकप्रिय रहे हैं।

डॉ. किशन तिवारी की इसी लोकप्रियता को और व्यापक पाठकों की जिज्ञासा को पूरा करने के ध्येय से उनके सभी ग़ज़ल-संग्रहों से चुनकर 550 चर्चित शेरों का यह संग्रह प्रस्तुत है। इन संग्रह से गुजरते हुए बार-बार यह महसूस होता है कि किशन तिवारी की ग़ज़लों का मूल स्वर इस असंगत व्यवस्था के प्रति असहमति है, विरोध है। इस विरोध में व्यवस्थागत बदलाव की आकांक्षा प्रबल है। डॉ. किशन की ग़ज़ल चेतना मूलतः उस समतावादी संघर्ष चेतना का ही एक अंग बन कर उतरी है, जो परिवर्तन की पक्षधर होते हुए जड़ता के विरुद्ध विद्रोह करती है। इसीलिए उनकी शायरी के कथ्य का सम्बन्ध अपने समाज, राजनीति, मजदूर और आम जीवन के दुःख-दर्द से है। यद्यपि उन्होंने प्रकृति और प्रेमाभिव्यक्ति को लेकर भी कतिपय वैयक्तिक शेर लिखे हैं, लेकिन उनका केन्द्रीय भाव सामाजिक सरोकारों का ही रहा है, जिसे उन्होंने अनेक शेरों के जरिए स्पष्ट किया है—